Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 4, Petersburg 1865



चक्षसा जनाँ अनु । पश्यसि ṚV. 1,50,6. वत्सो अनु गामपश्यत् 164,9. द्राघीयासमनु पश्येत पन्थाम् 10,117,5. उभे नृचक्षसा अनु पश्यते विशौ 9,70,4. AV. 18,4,3. TBR. 2,4,2,6. TS. 6,1,5,2.3. देवलोकम् 2,5,6,1. 11,3. AIT. BR. 7,6. ÇAT. BR. 14,7,2,18. KAṬHOP. 4,4. ÇVETÂÇV. UP. 1,15. यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ÎÇOP. 6 (vgl. MBH. 5,1784). तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः 7 (PRAB. 91,15). — अपाङ्क्त्यो यावतः पाङ्क्त्यान्भुञ्जानाननुपश्यति M. 3,176 (= MBH. 13,4292). MBH. 3,2426. 12096. 4,1738. 5,4569. 7,1737. 6199. HARIV. 8806. R. 2,113,4. R. GORR. 2,59,4. 75,22. 5,10,7. 6,3,6. VÂJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 50,b,39. भवस्य देवस्य किलानुपश्यतः *vor den Augen des Gottes* BHÂG. P. 8,12,23. (तस्मिन्) ब्रह्मरुद्रौ च भूतानि भेदेनाज्ञो ऽनुपश्यति 4,7,52. नह्यन्यमनुपश्यामि कंचिद्योधिष्ठिरे बले । यः शक्तः समरे भीष्मं प्रतियोद्धुम् MBH. 6,5456. आत्मनः सदृशं सा तु भर्तारं नान्वपश्यत *fand* 9,2986. नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतो ऽनुपश्ये BHÂG. P. 7,9,44. न च श्रेयो ऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे BHAG. 1,31. R. GORR. 2,76,21. 3,46,6. 6,11,27. प्रत्यक्तम् *vor sich sehen* 103,11. पृष्ठतः *sich umsehen* 5,49,33. अनृतम् *falsch sehen* 2,30,4. *hinterher sehen, wieder sehen:* क्वचिच्छृणोति शृण्वत्यां पश्यन्त्यामनुपश्यति BHÂG. P. 4,25,60. यद्दृष्टं दृष्टमनुपश्यति PRAÇNOP. 4,5. अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य यथापरे *zurückschauen* KAṬHOP. 1,6. *in Betracht ziehen, erwägen, berücksichtigen:* धर्ममेवानुपश्यन्तश्चक्रुर्धर्मपरायणाः MBH. 1,2477. R. 2,51,8. R. GORR. 2,94,10. त्रिवर्गम् 1,6,5. इदं वचो बन्धुजनार्थसिद्धये मयोच्यमानं यदि नानुपश्यसि 3,43,43. न कार्यं न च मर्यादां नरः क्रुद्धो ऽनुपश्यति MBH. 3,1082. *erkennen als, ansehen für, halten für:* तमात्मस्थं ये ऽनुपश्यन्ति ÇVETÂÇV. UP. 6,12. यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति BHAG. 13,30. 15,10. MBH. 1,4241. 13,15. HARIV. 7347. Spr. 1848. BHÂG. P. 2,4,21. 5,14,5. अनुस्पष्ट *bemerkt:* अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान्न सुनोति सोमम् ṚV. 10,160,4. — 2) *Jmd bedenken mit:* ब्राह्मणानग्रहारैर्वा यथावदनुपश्यसि MBH. 15,679. सुग्रीवम् — भवान्परिग्रहैः प्राप्तैर्यथावदनुपश्यतु R. 4,16,52. — caus. med. *zeigen:* बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ṚV. 10,14,1. NIR. 10,20. AV. 6,28,3.

— समनु *anblicken, hinblicken auf:* स चेत्समनुपश्येत समग्रं कुशलं भवेत् MBH. 12,2502. तत्र गतं न पश्यन्ति ये तं समनुपश्येरन् BHÂG. P. 5,21,9. निर्द्वंद्वेन विमुक्तेन मोक्षं समनुपश्यता MBH. 12,528. *bemerken, wahrnehmen* SADDH. P. 4,21,b. धिया समनुपश्यन्ति तद्गताः सवितुर्गतिम् MBH. 12,7425. *halten für:* स्वेनानुमानेन परं साधुं समनुपश्यति 1,5037. 12,13864.

— अन्तर् *dazwischen schauen, hineinschauen:* अन्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ṚV. 1,132,3. अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु 2,27,3.

— अभि *beschauen, hinblicken auf, anblicken, überblicken, beobachten* ṚV. 1,25,11. 3,48,3. अभिपश्यन्ती वयुना जनानाम् 7,75,4. अभि या बृहतो दिवोऽभि पूषेव पश्यतः 8,25,7. 9,9,6. 73,8. 10,136,3. VÂLAKH. 9,6. AV. 10,8,24. ÇAT. BR. 11,8,2,1. उन्मत्तेवाभिपश्यन्ती भर्तारम् R. GORR. 2,30,2. 4,2,16. 4,19. KATHÂS. 32,68. 45,142. आतुरम् SUÇR. 1,30,6. तस्याभिपश्यतः *vor seinen Augen* BHÂG. P. 3,13,19. *erblicken, gewahr werden:* उद्यानमभिपश्यन्तः MBH. 1,5002. R. GORR. 2,32,34. 74,1 (med.). 3,77,7. 5,31,38. 39. सो ऽहमस्मिन्समारम्भे मुनीतस्य कलामपि । विमृशन्नाभिपश्यामि 3,46,11. भूतेषु सर्वेष्वभिपश्यतां (gen. pl.) तव (st. त्वाम्!) BHÂG. P. 4,6,46. *kennen* KHÂND. UP. 4,3,6.

— अव *hinblicken auf, beobachten:* सत्यानृते अवपश्यं जनानाम् ṚV. 7,49,3. अतः समुद्रमुद्वतश्चिकित्वाँ अव पश्यति 8,6,29. 10,179,1. AV. 18,4,37. med. *erblicken, erleben:* पुष्टिं सो अघ्न्यानां स्वे गोष्ठे ऽव पश्यते AV. 9,4,19.

— आ *anschauen* AV. 4,20,1.

— उद् *in der Höhe erblicken:* उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् ṚV. 1,50,10. तान्समन्तमेवोदारान्परियत्तानुदपश्यन् AIT. BR. 2,31. *in der Zukunft erblicken, voraussehen, erwarten:* पालयितुः प्रजानामुत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम् RAGH. 2,60. कालक्षेपम् MEGH. 23. शोभामद्रेः — भवित्रीम् 60. BHAṬṬ. 8,68. *erblicken, gewahr werden* MEGH. 102. ÇIÇ. 1,15. — Vgl. उत्पश्य.

— परा *in die Ferne blicken* AV. 4,20,1. यावदासीनः परापश्यति *soweit man sitzend sehen kann* TS. 6,2,4,4. ÇAT. BR. 11,5,5,2. यतरा नो दवीयः परापश्यात् 3,6,2,3. (*in der Ferne*) *erblicken* ÇAT. BR. 6,3,3,6. 9,5,19. नद्यै पारम् 11,1,6,6. 14,1,3,7. यमद्दूरात्परापश्येत् KÂTJ. ÇR. 25,4,1.

— परि *überblicken:* परि स्पशो वरुणस्य पश्यन्ति रोदसी ṚV. 7,87,3. AV. 11,2,25. बाह्यान्तः परिपश्यताम् (gen. pl.) *von aussen und innen betrachten* PRAB. 71,6. *bemerken, sehen:* ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वम् ṚV. 1,162,12. य आत्मानं न परिपश्येदितासुः स्यात् TS. 6,6,7,2. GOBH. 4,5,20. *erspähen, ansichtig werden, erblicken* ṚV. 1,152,4. 164,25. 168,9. 3,26,8. यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत् 10,51,2. अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यत् 68,8. 87,10. देवा वै वले गाः पर्यपश्यन् AIT. BR. 6,24. TS. 7,1,6,1. TBR. 1,2,1,4. VS. 31,19. सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुम् ṚV. 1,146,4. सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः 9,71,9. अथ यद्युदक आत्मानं परिपश्येत् (पश्येत् ÇAT. BR. 14,9,4,6). BṚH. ÂR. UP. 6,4,6. KHÂND. UP. 1,4,3. *seine Gedanken auf Etwas richten:* तस्य धर्मादपेतस्य पापानि परिपश्यतः MBH. 1,4989. *kennen:* एतस्य ते दुष्प्रणीतस्य राजन् शेषस्याहं परिपश्याम्युपायम् 3,224. नह्यहं परिपश्यामि वधे कं च न शुष्मिणः । धृष्टद्युम्नादृते 7,286. सत्त्वं क्षेत्रज्ञः परिपश्यति 12,7108. *erkennen:* शरीराद्विप्रमुक्तं हि सूक्ष्मभूतं शरीरिणम् । कर्मभिः परिपश्यन्ति शास्त्रोक्तैः शास्त्रवेदिनः 9101. BHÂG. P. 3,32,30. *erkennen als:* यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः MUṆḌ. UP. 1,1,6. 2,2,7. BHÂG. P. 3,25,18. — परिपश्यते PAÑKAT. 199,10 fehlerhaft für परिपच्यते.

— प्र *vorausblicken, voraussehen; vor sich sehen:* इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य ṚV. 6,47,7. गातुं प्रपश्यन् AV. 13,1,4. प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ṚV. 10,120,5. 1,174,6. पशुर्वै नीयमानः स मृत्युं प्रापश्यत् AIT. BR. 2,6. प्रपश्यमानो अमृतत्वमेमि ṚV. 10,124,2. नहि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकम् BHAG. 2,8. गुणं चान्यं नास्य वधे प्रपश्ये MBH. 13,31. नान्यां गतिं प्रपश्यामि R. GORR. 1,60,27 (58,24 SCHL.). नाहं भयं प्रपश्यामि कुतश्चित्ते 2,76,23. 3,43,39. एवं त्वहं प्रपश्यामि न त्वं रामस्य राक्षस । समर्थः संयुगे स्थातुं मुहूर्तमपि सायुधः ॥ 27,18. *sehen, schauen, gewahr werden, erkennen:* उत यद्यन्धो भवति प्रैव पश्यति TS. 2,2,4,4. चक्षुर्भ्यां न प्रपश्यामि JAGNADATTAV. 2,54. आदित्प्रापश्यद्भुवनानि विश्वा ṚV. 10,88,11. ÇAT. BR. 3,8,3,12. 8,4,4,2. ÇVETÂÇV. UP. 2,15. मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः । तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति M. 8,85. 11,236. MBH. 1,5284. 3,2659. त्वामरोगं प्रपश्ये 5,687. श्वित्री यावत्प्रपश्यति । पङ्क्त्यां समुपविष्टायां तावद्दूषयते 13,4287. न चास्य मनसस्तुष्टिं चित्रलेखा प्रपश्यति HARIV. 10056. यदात्मानमात्मन्येव प्रपश्यति MBH. 14,563. R. 6,3,20. BHÂG. P. 3,23,7. 8,3,27. 7,35. Verz. d. Oxf. H. 58,b, N. सर्वस्यास्य प्रपश्यन्तस्तपसः पुण्यमु-

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007